Department :- Ayurved Samhita & Siddhant

Topic :- द्रव्य

व्युत्पत्ति

- ‘द्रु’ धातु + ‘यत्’ प्रत्यय

  गति,ज्ञान,गमन

निरुक्ति

- द्रवति गच्छति परिणाममभीक्ष्णमिति द्रव्यम् ।’

  जो सदैव परिणाम को प्राप्त करते हैं या जिनसे परिणाम का ज्ञान होता है।

लक्षण

- यत्राश्रिता: कर्मगुणा: कारणं समवायि यत् तद् द्रव्यम् ।

(च.सू.१/२३)

- द्रव्यलक्षणं तु क्रियागुणवत् समवयिकारणम् इति ।

(सु.सु.४०/२)

- क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम् ।

(वै.सू.१/१५)

संख्या

- खादीन्यात्मा मन: कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रह:।

(च.सू.१/४८)

- पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि।

(वै.द.१/५)

- तत्र द्रव्याणि पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशकालदिगात्मनांसि नवैनेति।

(तर्कसंग्रह)

भेद

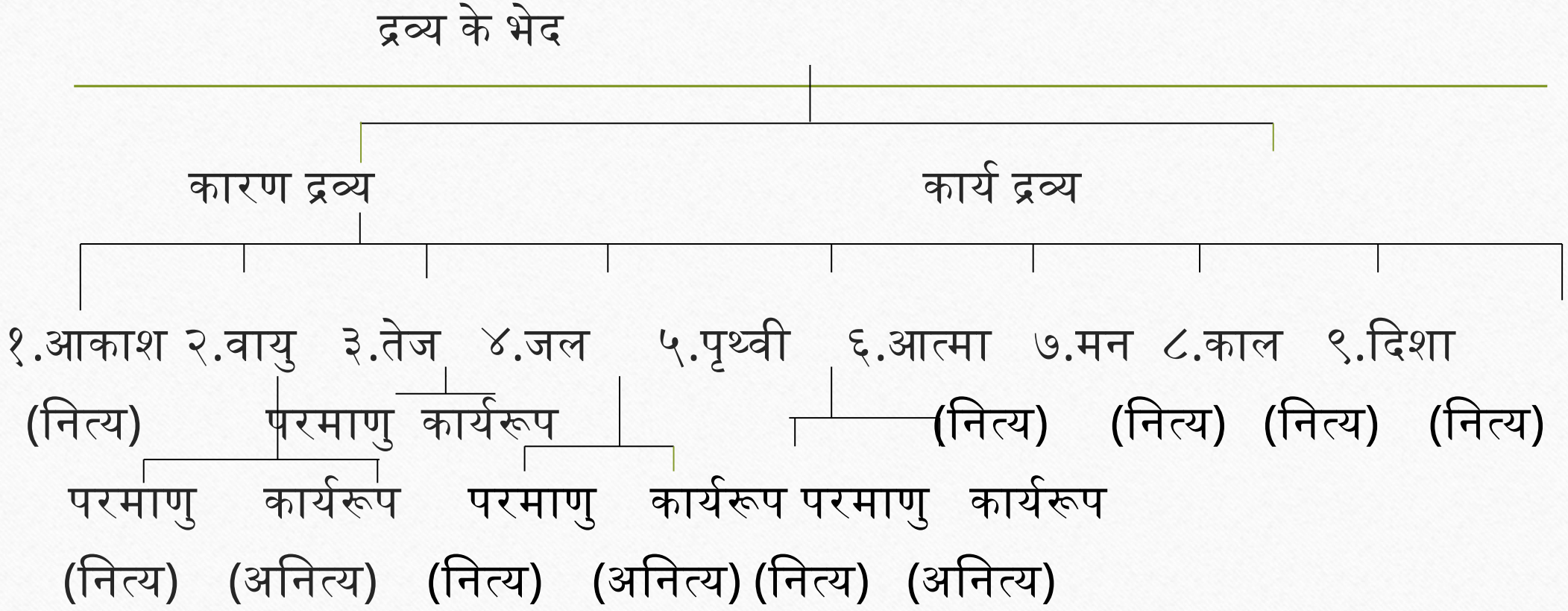
द्रव्य के भेद
कारण द्रव्य
कार्य द्रव्य
१.आकाश (नित्य)
२.वायु
परमाणु (नित्य)
कार्यरूप (अनित्य)
३.तेज
परमाणु (नित्य)
कार्यरूप (अनित्य)
४.जल
परमाणु (नित्य)
कार्यरूप (अनित्य)
५.पृथ्वी
परमाणु (नित्य)
कार्यरूप (अनित्य)
६.आत्मा (नित्य)
७.मन (नित्य)
८.काल (नित्य)
९.दिशा (नित्य)

कार्य द्रव्य

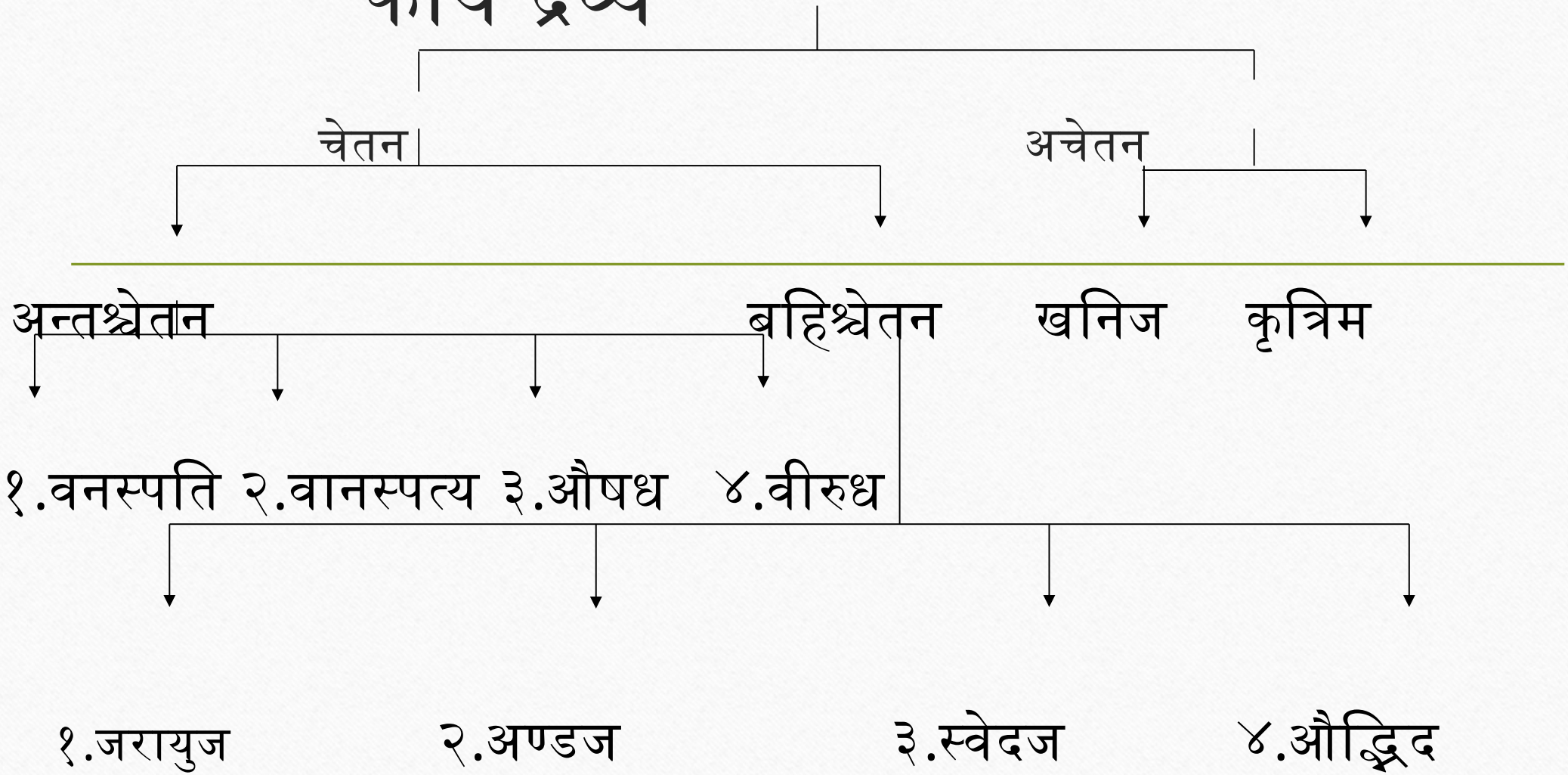
चेतन
अचेतन
अन्तश्चेतन
बहिश्चेतन
खनिज
कृत्रिम
१.वनस्पति
२.वानस्पत्य
३.औषध
४.वीरुध
१.जरायुज
२.अण्डज
३.स्वेदज
४.औद्भिद

द्रव्य के अन्य भेद

उत्पत्ति भेद से	प्रयोग भेद से	रस भेद से	दोषकर्मभेद से	आहार भेद से चरकानुसार	आहार भेद से सुश्रुतानुसार
जांगम द्रव्य (कस्तूरी-गोरोचन-दूध) औद्भिद द्रव्य (गोधूम-आँवला-यव) ३. भौम द्रव्य (गंधक-पारद आदि)	१.औषध द्रव्य २. आहार द्रव्य	१.मधुरस्कन्ध २.अम्ल स्कन्ध ३.लवण स्कन्ध ४.कटु स्कन्ध ५.तिक्त स्कन्ध ६.कषाय स्कन्ध	१.दोष शामक (अ) वात शामक (ब) पित्त शामक (स) कफ शामक २.दोष प्रकोपक (अ) वात प्रकोपक (ब) पित्त प्रकोपक (स) कफ प्रकोपक ३.स्वास्थ्यानुवर्तन	१.शूकधान्य वर्ग २. शमीधान्य वर्ग ३. मांस वर्ग ४. शाक वर्ग ५. फल वर्ग ६. हरित वर्ग ७. मद्य वर्ग ८. जल वर्ग ९. गोरस वर्ग ९०. ईक्षु वर्ग ११. कृतान्न वर्ग १२. आहारोपयोगी वर्ग	(क) द्रव वर्ग जल वर्ग क्षीर वर्ग दधि वर्ग तक्र वर्ग घृत वर्ग तैल वर्ग मधू वर्ग ईक्षु वर्ग मद्य वर्ग मूल वर्ग (ख) अन्न वर्ग शालि वर्ग कुधान्य वर्ग मुद्गादि वर्ग मांस वर्ग फल वर्ग शाक वर्ग

द्रव्यों की उत्पत्ति

सर्वं द्रव्यं पांचभौतिकमस्मिन्नर्थे तच्चेतनावदचेतनं च।

तस्य गुणा: शब्दादयो गुर्वादयश्च द्रवान्ता:।।

(च.सू. २६/१०)

महाभूतों की गुण तालिका

महाभूत	विशिष्ट गुण	अनुप्रविष्ट गुण	त्रिगुण	गुर्वादि गुण
१. आकाश	शब्द	---	सत्त्व	अप्रतिघात
२. वायु	स्पर्श	शब्द	रज	चलत्व
३. अग्नि	रूप	शब्द, स्पर्श	सत्त्व, रज	उष्णत्व
४. जल	रस	शब्द, स्पर्श, रूप	सत्त्व, तम	द्रवत्व
५. पृथ्वी	गन्ध	शब्द, स्पर्श, रूप, रस	तम	खरत्व

आकाश महाभूत

- तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश: संभूत:।

  (तैत्तिरीयोपनिषद)

- सत्वबहुलमाकाशम् ।

  (सुश्रुत)

- शब्दगुणकमाकाशम्। तच्चैकं विभु नित्यं च।

  (तर्कसंग्रह)

- आकाशस्य तु विज्ञेय: शब्दो वैशेषिको गुण: ।

  (कारिकवली)

आकाश महाभूत के गुण

- आकाश महाभूत के ६ गुण होते है-
- शब्द
- संख्या
- परिणाम
- पृथकत्त्व
- संयोग
- विभाग

भौतिक गुण

- श्लक्षण
- मृदु
- विशद
- लघु
- विविक्त
- सूक्ष्म
- व्यवायि

आयुर्वेदोक्त कर्म

१. मार्दव

२. सौषिर्य

३. अवकाशावयव

वायु महाभूत

निरुक्ति – वा गतिगन्धनयो:। (सुश्रुत संहिता)

- आकशाद्वायु:। (तैत्तिरियोपनिषद)
- रूपरहित: स्पर्शवान् वायु:। (तर्कसंग्रह)
- रजोबहुलो वायु:। (सु.सं)

वायु के भेद

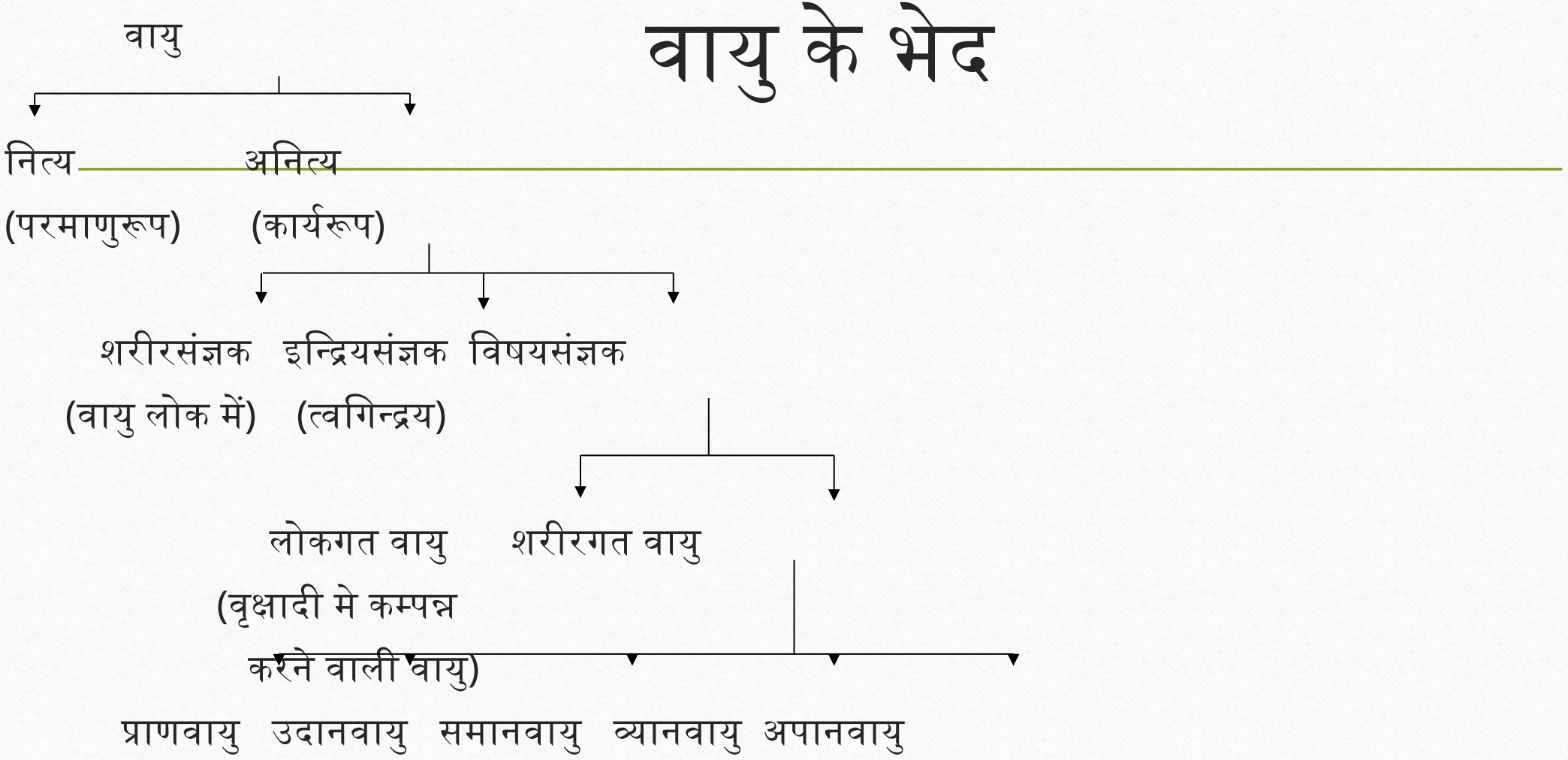
वायु
नित्य
(परमाणुरूप)
अनित्य
(कार्यरूप)
शरीरसंज्ञक
(वायु लोक में)
इन्द्रियसंज्ञक
(त्वगिन्द्रय)
विषयसंज्ञक
लोकगत वायु
(वृक्षादी मे कम्पन्न
करने वाली वायु)
शरीरगत वायु
प्राणवायु
उदानवायु
समानवायु
व्यानवायु
अपानवायु

वायु महाभूत

वैशेषिक दर्शनोक्त गुण

- स्पर्श
- संख्या
- परिणाम
- पृथक्त्व
- संयोग
- विभाग
- परत्व
- अपरत्व
- संस्कार

भौतिक गुण	आयुर्वेदोक्त कर्म
खर	१. रौक्ष्य
रूक्ष	२. ग्लानि
विशद	३. विचार
उष्ण	४. वैशद्य
लघु	५. लाघव
सूक्ष्म	
विकासी	

अग्नि महाभूत

- वायोरग्निः। (तै.उ.)
- तेजो रूपस्पर्शवत् । (वै.द.)
- सत्त्वरजोबहुलोग्निः। (सुश्रुत संहिता)
- उष्णस्पर्शवत्तेजः। (तर्कसंग्रह)

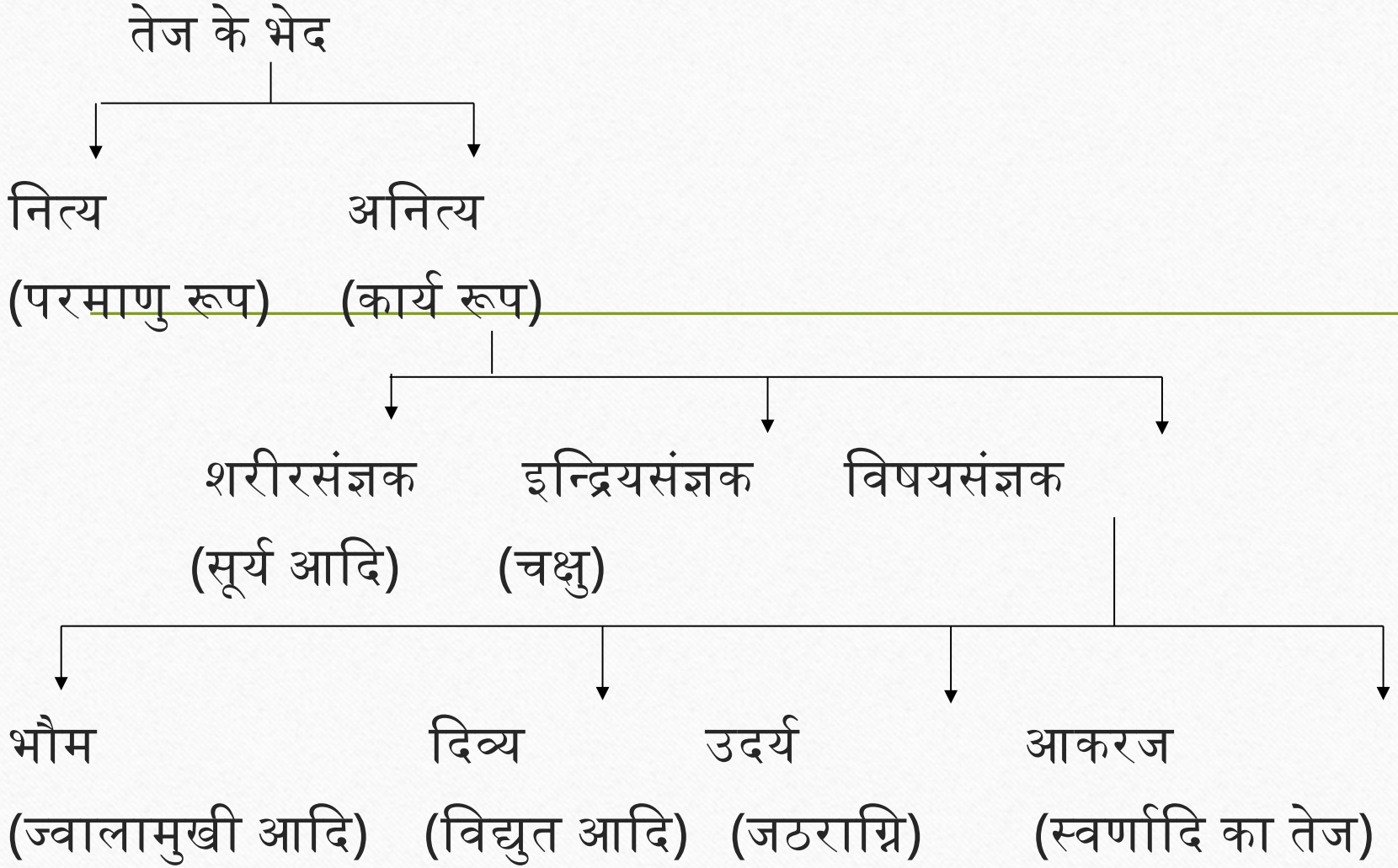
तेज के भेद
नित्य
(परमाणु रूप)
अनित्य
(कार्य रूप)
शरीरसंज्ञक
(सूर्य आदि)
इन्द्रियसंज्ञक
(चक्षु)
विषयसंज्ञक
भौम
(ज्वालामुखी आदि)
दिव्य
(विद्युत आदि)
उदर्य
(जठराग्नि)
आकरज
(स्वर्णादि का तेज)

वैशेषिक दर्शनोक्त गुण

१. रूप
२. स्पर्श
३. संख्या
४. पृथकत्व
६. संयोग
७. विभाग
८. परत्व
९. अपरत्व
१०. द्रव
११. संस्कार

भौतिक गुण	आयुर्वेदोक्त कर्म
• खर	१. दाह
• रूक्ष	२. पाक
• विशद	३. प्रभाप्रकाशन
• उष्ण	४. वर्णप्रकाशन
• लघु	५. ताप
• तीक्ष्ण	६. दारण
• सूक्ष्म	७. परिणाम
• ऊर्ध्वगामी	

जल महाभूत

- आग्नेराप: (तै.उ.)
- सत्त्वतमो बहुल आप:। (सू.सं)
- रूप रस स्पर्शवत्य आपो: द्रवा: स्निग्धा:। (वै.द.)

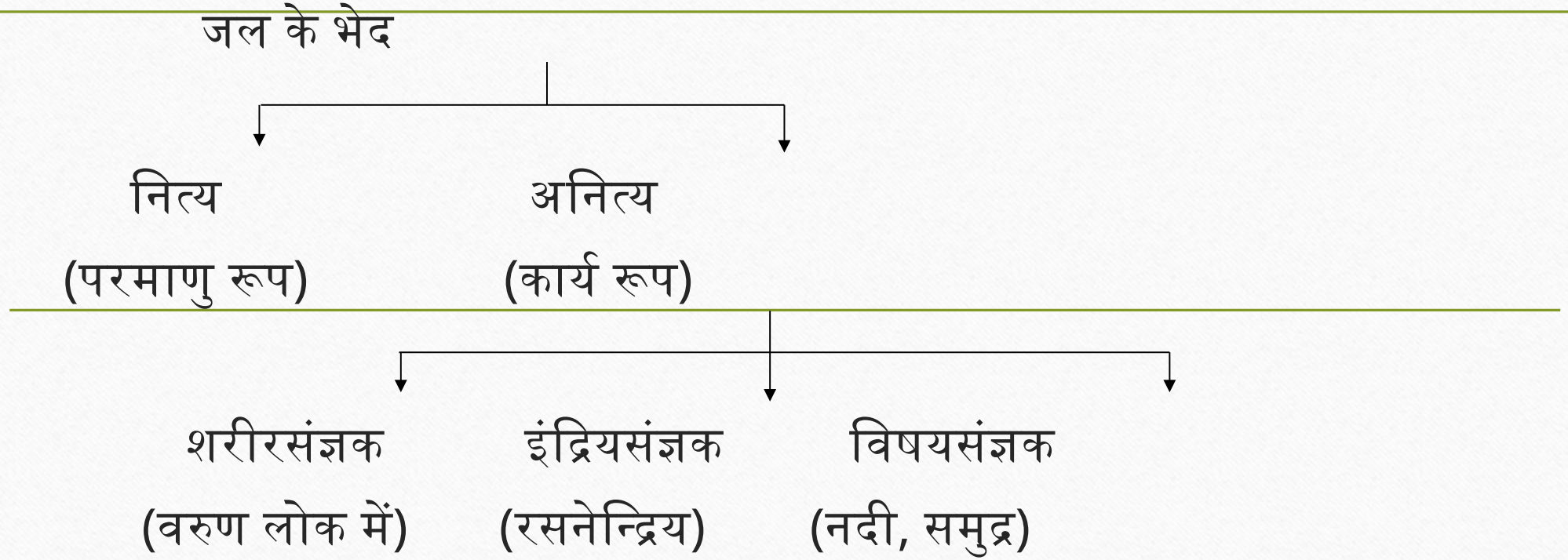

जल के भेद

नित्य (परमाणु रूप)

अनित्य (कार्य रूप)

शरीरसंज्ञक (वरुण लोक में)

इंद्रियसंज्ञक (रसनेन्द्रिय)

विषयसंज्ञक (नदी, समुद्र)

वैशेषिक दर्शनोक्त गुण

- रूप
- रस
- स्पर्श
- द्रव
- स्नेह
- संख्या
- पृथक्त्व
- संयोग
- विभाग

१०. परत्व

११. अपरत्व

१२. गुरुत्व

१३. संस्कार

भौतिक गुण	आयुर्वेदोक्त कर्म
• स्निग्ध	१. उपक्लेद
• द्रव	२. स्नेहन
• मृदु	३. बन्ध
• पिच्छिल	४.विष्यन्दन
• शीत	५. मार्दव
• स्तिमित	६. तृप्ति
• गुरु	७. संहनन
• मन्द	
• सर	

पृथ्वी महाभूत

- अद्भ्य पृथ्वी । (तै.उ.)
- अद्भ्यो गंधगुणा भूमि: । (मनु.स्मृति)
- तमो बहुला पृथ्वी । (सू.सं.)
- तत्र गन्धवती पृथ्वी । (तर्क संग्रह)
- रूपरसगंधस्पर्शवती पृथ्वी। (वै.द.)

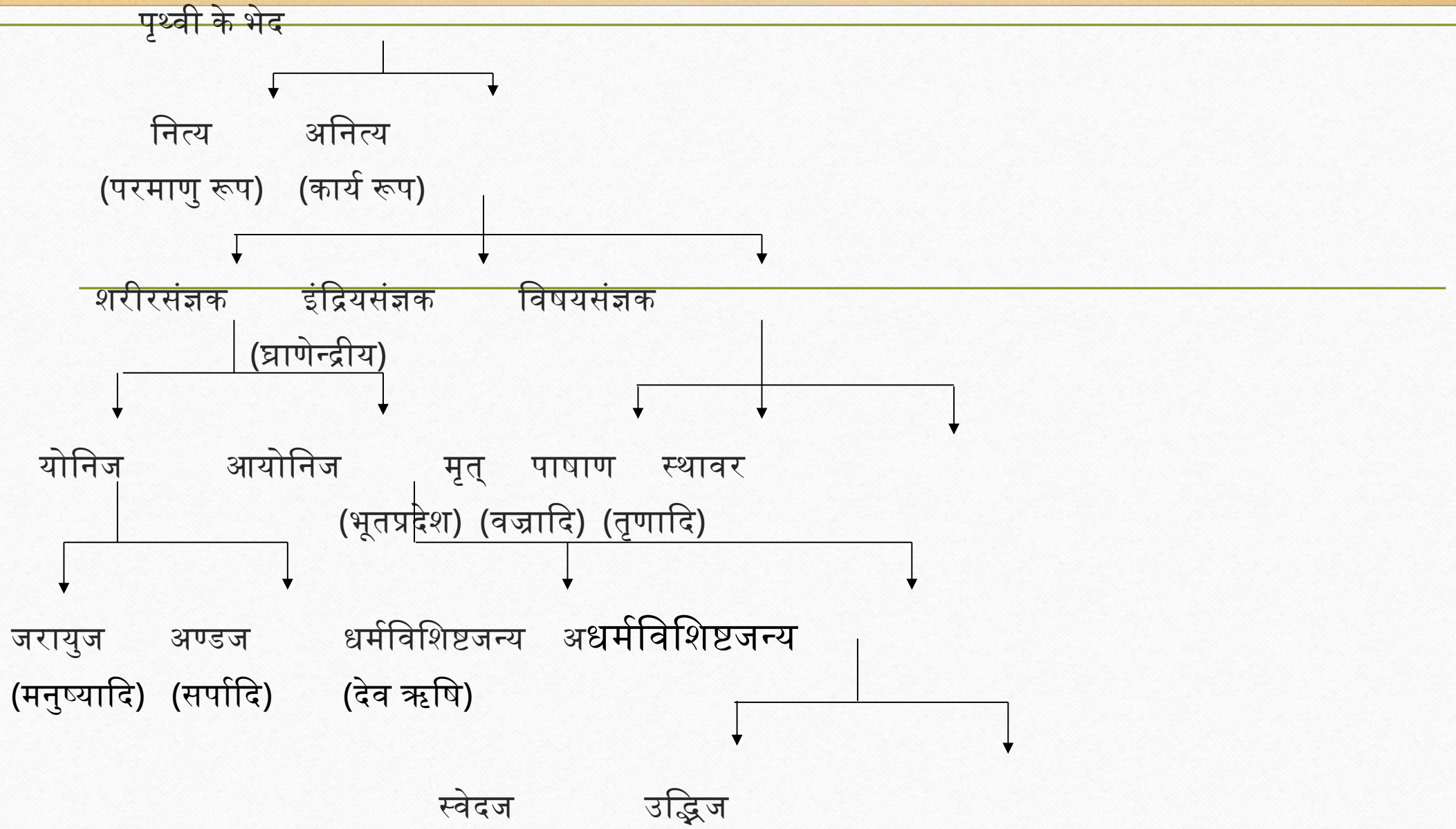
पृथ्वी के भेद
नित्य
(परमाणु रूप)
अनित्य
(कार्य रूप)
शरीरसंज्ञक
इंद्रियसंज्ञक
(घ्राणेन्द्रीय)
विषयसंज्ञक
योनिज
आयोनिज
(भूतप्रदेश)
मृत्
(वज्रादि)
पाषाण
(तृणादि)
स्थावर
जरायुज
(मनुष्यादि)
अण्डज
(सर्पादि)
धर्मविशिष्टजन्य
(देव ऋषि)
अधर्मविशिष्टजन्य
स्वेदज
उद्भिज

वैशेषिक दर्शनोक्त गुण

- स्पर्श
- संख्या
- परिणाम
- पृथक्त्व
- संयोग
- विभाग
- परत्व
- अपरत्व
- वेग
- द्रवत्व

११. गुरु
१२. रूप
१३. रस
१४. गन्ध

भौतिक गुण	आयुर्वेदोक्त कर्म
• खर	१. उपचय
• रूक्ष	२. संघात
• कठिन	३. गौरव
• विशद	४. स्थैर्य
• अनुष्णशीत	५. बल
• गुरु	६. धारण
• मंद	
• सांद्र	
• स्थूल	
• अधोगामी	

आत्मा

- आयुर्वेद एक आस्तिक विज्ञान है,अतः यहा आत्मा की सत्ता स्वीकार की गई है।
- **आत्मा के लक्षण-**

प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकारा; सुखदु:खेच्छापर्यत्नाश्चात्मनो लिंगनि।

(वै.द.)

- **आत्मा के गुण-**

तस्य सुख-दु:खे इच्छाद्वेषौ प्रयत्न: प्राणापानावुन्मेषनिमेषौ बुद्धिर्मन: संकल्पोविचरणा स्मृति विज्ञानमध्यवसायो विषयोपलब्धिश्च गुणा:।

(सु.शा.१/१०)

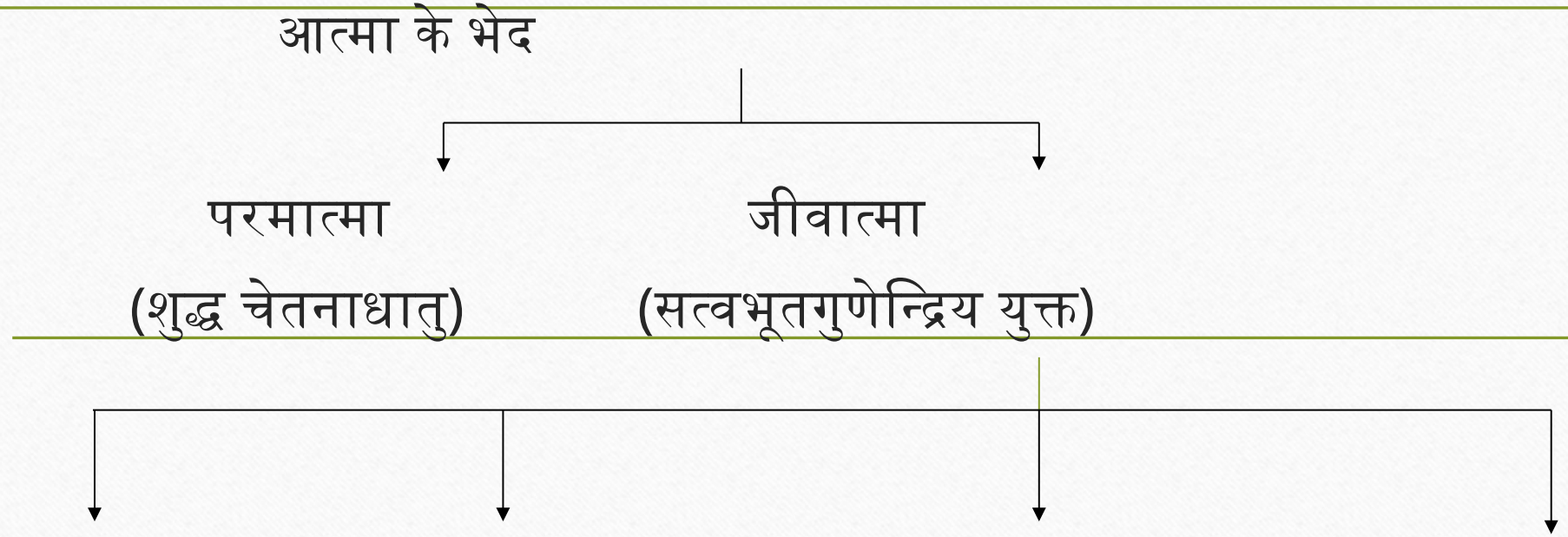

आत्मा के भेद

- परमात्मा (शुद्ध चेतनाधातु)
- जीवात्मा (सत्वभूतगुणेन्द्रिय युक्त)
  - कर्मपुरुष या चिकित्स्य पुरुष या षड्धात्वात्मक पुरुष
  - राशिपुरुष या संयोग पुरुष
  - मुक्त आत्मा या प्रशान्त भूतात्मा
  - अतिवाहिक पुरुष या लिंग पुरुष

मन निरूपण

मन का लक्षण-

- आत्मेन्द्रियार्थ सन्निकर्ष ज्ञानस्य भावोऽभावश्च मनसो लिंगम् ।

(वै.द.)

- युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्।

(न्याय.द.)

- मन्यते ज्ञायते अनेन इति मन:।

(प्रशस्तपादभाष्य)

मन के विषय-

चिन्त्यं विचार्यमूह्यं च ध्येयं सङ्कल्प्यमेव च।
यत्किञ्चिन्मनसो ज्ञेयं तत् सर्वं ह्यर्थसञ्ज्ञकम्।।

(च.शा.१/२०)

मन के कर्म-

इन्द्रियाभिग्रहः कर्म मनसः स्वस्य निग्रहः।

(च.शा.१/२१)

काल

- स सूक्ष्मामपि कलां न लीयत इति काल:।

  (सु.सू ६/८)

- कलयति संक्षिपयतीति वा काल:।

  (डल्हन)

- काल: परिणाम उच्यते।

  (च.सू. ११/४२)

- कालो हि नाम भगवान् ।

  (सू.सू. ६/२)

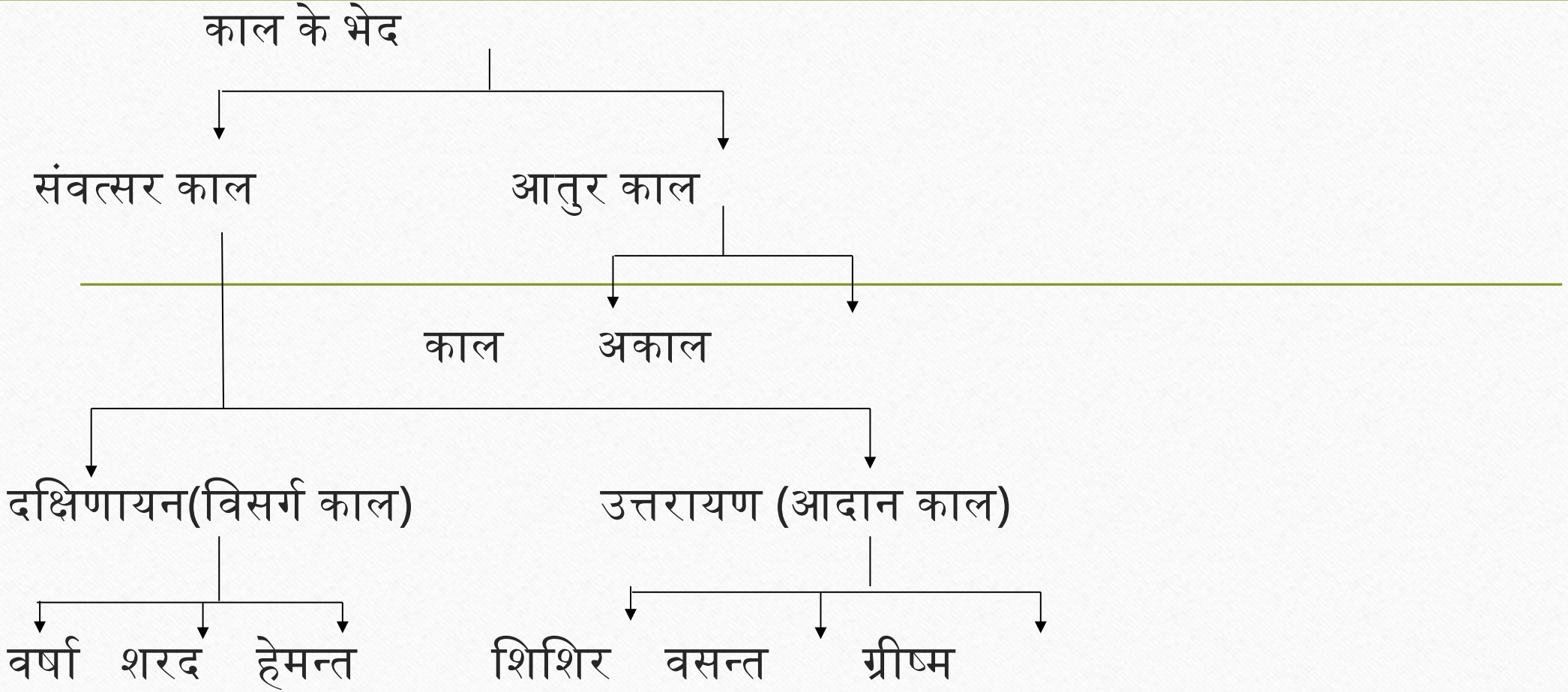
काल के भेद
संवत्सर काल
आतुर काल
काल
अकाल
दक्षिणायन(विसर्ग काल)
उत्तरायण (आदान काल)
वर्षा
शरद
हेमन्त
शिशिर
वसन्त
ग्रीष्म

दिशा

- इत इदमिति यतस्तद्दिश्यं लिंगम् ।

(वै.द.)

इसकी अपेक्षा ये दूर है, या समीप है

अन्तश्चेतन द्रव्य

- वनस्पति- फलैर्वनस्पति:।

  यथा- वट, गूलर, पीपल आदि।

- वानस्पति- पुष्पैर्वानस्पत्य फलैरपि ।

  यथा – आम, जामुन, अमरूद आदि।

- औषध- ओषध्य :फलपाकान्ता:।

  यथा- **यव, गेहूँ** आदि।

- वीरुध- प्रतानैर्वीरुध: स्मृता:। (च.सू.१/७२-७३)

  यथा- **गुडूची**।

बहिश्चेतन द्रव्य

- जरायुज- गर्भाशय से जन्म लेने वाले

  यथा – पशु, मनुष्य आदि।
- अण्डज – जो अण्डे से उत्पन्न होते है।

  यथा – पक्षी, सर्प आदि।
- स्वेदज – स्वेदोत्पन्न स्वेदज होते हैं।

  यथा- कृमि आदि।
- उद्भिज्ज- जो जमीन को फोड़कर निकलते हैं।

  यथा- इन्द्रगोपादि ।

अचेतन द्रव्य

- खनिज – जो खदानों से प्राप्त होते हैं।

  यथा – गंधक, अभ्रक आदि।

- कृत्रिम – यथा- पित्तल आदि।

THANK YOU